अमर शहीद सुनील कुमार को ऑनलाइन ज्ञानरथ गायत्री परिवार की श्रद्धांजलि

रक्षाबंधन के पावन पर्व पर एक बहिन का सैनिक भाई को समर्पण

- निशा भारद्वाज

दो शब्द

ऑनलाइन ज्ञानरथ गायत्री परिवार के मंच से अमर शहीद सुनील कुमार के बारे में लिखना हमारे लिए अत्यंत गौरव का विषय है।

इस परिवार की समर्पित सहकर्मी आदरणीय निशा भारद्वाज ने ह्रदय की जिस स्थिति में यह मार्मिक संस्मरण लिखा है उसे केवल अनुभव ही किया जा सकता है। बहिन निशा जी   ने तो अपने जाबांज सैनिक भाई सुनील के साथ एक-एक क्षण जिया है,

अगर हमें इस संस्मरण को पढ़ते समय अपनी अश्रुधारा को रोकपाना कठिन हो रहा है तो बहिन की क्या दशा हुई होगी।

बहिन निशा जी का धन्यवाद् करते हैं जिन्होंने हमारे आग्रह का सम्मान करते हुए ऐसे तथ्यों को संसार के सामने लाने का एक सराहनीय प्रयास जो केवल बातें बनकर ही रह जाते।

हम अमर शहीद सुनील कुमार जी की माता आदरणीय निर्मला देवी के साहस के आगे नतमस्तक हैं जिन्होंने अपनी वेदना एवं शासन के प्रति रोष को सार्वजानिक करके हम सबका मार्गदर्शन किया

है। अमर उजाला में प्रकाशित न्यूज़ क्लिप आपके समक्ष प्रस्तुत की गयी है।

निशा बहिन जी ने इस मार्मिक संस्मरण के साथ ज़ी टीवी की एक वीडियो क्लिप भी भेजी थी,इस क्लिप को थोड़ा काट कर आप के समक्ष प्रस्तुत किया गया है।

अंत में केवल इतना ही कहेंगें कि 23 पन्नों की इस pdf फाइल में एक बहिन की भाई के प्रति भावनाएं छिपी हैं, इन भावनाओं का सम्मान करना ऑनलाइन ज्ञानरथ गायत्री परिवार के प्रत्येक सदस्य का परम कर्तव्य है।

जय गुरुदेव

26 अगस्त 2023

ऑनलाइन ज्ञानरथ

गायत्री परिवार

[कहाँ तुम चले गए](#) (वीडियो लिंक)

MY DEAR BROTHER I REALLY MISS YOU AT EVERY MOMENT WITH MY TEAR

11 साल तक हालात से लड़ त्यागे प्राण

नेता क्या जानें, बेटे की मौत का दर्द

अमर उजाला ब्यूरो

- दुःख बांटने नहीं आया कोई : निर्मला देवी
- सरकार की ओर नहीं मिली आर्थिक मदद

देहरा गोपीपुर (कांगड़ा)। 11 साल तक हालत से लड़ते-लड़ते 24 जून को इस दुनिया से अलविदा हुए बहादुर सैनिक सुनील कुमार के परिजनों के आंसू पोंछने के लिए आज दिन तक कोई नेता या प्रशासनिक अधिकारी नहीं आया। मृतक सुनील के परिजनों में रोष है कि उनके दर्द को बांटने के लिए किसी के पास दो मिनट का समय तक नहीं है। उन्होंने कहा कि नेता क्या जाने फौजी बेटे की मौत का दर्द।

मृतक सैनिक सुनील की मां निर्मला देवी का कहना है कि ग्यारह वर्ष पहले जेएंडके के राजौरी सेक्टर में आतंकवादियों के साथ हुई मुठभेड़ में गांदियाड़ा का फौजी सुनील कुमार भी दुश्मनों पर टूटा, लेकिन इस मुठभेड़ में लगी गोलियों ने उसे हमेशा के लिए अपाहिज बना दिया। 11 साल तक हालात से लड़ते-लड़ते पिछले माह 24 जून को सुनील ने अपने प्राण गुमनामी में त्याग दिए। उन्होंने कहा कि उनका दुख-दर्द बांटने कोई नहीं आया और न ही उन्हें प्रदेश सरकार की ओर से कोई आर्थिक सहायता मिली। निर्मला ने बताया कि बेटी की जिम्मेदारी अभी सिर पर है। पेंशन भी अभी नहीं लगी है।

यहां पर लोगों के सामने एक बड़ा सवाल यह खड़ा हुआ है कि क्या किसी सैनिक को सम्मान तभी मिलता है, जब वह जंग के मैदान में मौत को गले लगाकर शहीद हो जाए।

मेरे भईया सुनील का जन्म 14 अगस्त 1979 को हुआ था मेरे पिताजी ट्रक ड्राईवर थे, हम चार बहनों का इकलौता भाई था सुनील

हम तीन बहनें भईया से छोटी थीं और दीदी भईया से बड़ी थी

भईया का बचपन से ही इंडियन आर्मी ज्वाइन करने का सपना था भईया के खेल भी भारत और पाकिस्तान की सेना को लेकर ही होते थे भईया बास्केटबॉल के प्लेयर थे। मेरे भईया क्रांतिकारियों में भगत सिंह राजगुरु, सुखदेव, चंद्रशेखर आजाद से बहुत प्रभावित थे। देश सेवा का जनून इन्हीं क्रांतिकारियों से था

बारहवीं कक्षा पास करने के बाद भईया ने अपनी तैयारियां शुरू कर दी थी हमारे गांव के लोग भईया को कमांडो बुलाते थे l

19 साल की उम्र में भईया आर्मी में भर्ती हो गए, भईया के सपने बहुत बड़े थे लेकिन किस्मत में कुछ और ही लिखा था l 1997 में भईया भर्ती हुए और 1999 में जब कारगिल युद्ध हुआ था उस समय भईया की ड्यूटी राजौरी में थी l पाकिस्तान

युद्ध विराम के बाद भी, अपनी करारी हार के बावजूद चैन से नहीं बैठा था, आए दिन सीमा पर हमले और गोलाबारी होती रहती थी l

15 नवंबर 1999 को हुई मुठभेड़ में मेरे भईया बुरी तरह से घायल हो गए, उसी दिन से भईया की जिंदगी बदल गई।

फौलादी सीना रखने वाला पानी की एक- एक बूंद के लिए तरस रहा था। हिम्मत, देश भक्ति, देश सेवा का जनून एवं अपने परिवार के लिए देखे गए बड़े- बड़े सपने, सब कुछ खत्म हो चुका था। भईया ने एक बार बताया था कि मुझे प्यास लगी थी, नर्स पानी का गिलास मेज पर रख कर चली गई लेकिन भईया की हालत इतनी खराब थी कि खुद से उठ कर पानी भी नहीं पी सकते थे। पूरी रात बिना सोए, प्यासे रहे और पानी के गिलास

को देखते रहे और अपने हालत को कोसते रहे l सुबह नर्स ने बताया कि डॉक्टर ने आपको पानी देने से मना किया है l भईया फिर बेबस होकर यही सोचते रहे कि उसी दिन अगर कुछ हो जाता तो अच्छा होता, ऐसी जिंदगी से तो मौत बेहतर थी l

आगे की जिंदगी तो उससे भी कष्टमय थी l कमर के नीचे का हिस्सा सुन्न था l डॉक्टरों का कहना था कि PARALYSIS हो गया है l जम्मू से भईया को चंडीगढ़ फोर्टिस अस्पताल में भर्ती कराया गया l एक साल तक भईया के शरीर में कोई हलचल नहीं होती थी l हमारी माताजी भईया के पास

रहती थी और घर में हम तीन बहनें और दादी जी रहती थी हमारे पिताजी 13 दिसंबर 1998 को स्वर्ग सिधार गए थे ।वे शुगर के मरीज थे गले से लेकर नाभि के नीचे तक भईया का ऑपरेशन हुआ था । एक दिन अपने आप ही भईया के stiches खुल गए, फिर दोबारा ऑपरेशन हुआ । दो दिन बाद भईया होश में आए थे । इसी दौरान सीमा पर   हमले होने से हॉस्पिटल में बहुत से घायल   सैनिकों को एडमिट करवाया गया ।   जो पहले से हॉस्पिटल में थे, उनमें जिनकी कंडीशन थोड़ी बेहतर थी उनको घर भेज दिया गया क्योंकि हॉस्पिटल में बेड खाली नहीं थे । सो सभी स्थिति

का अनुमान लगा सकते हैं और भईया को दिल्ली रेफर कर दिया गया। उस समय मम्मी के साथ नानाजी गए थे मेरे नानाजी रिटायर आर्मी ऑफिसर हैं और अभी 95 वर्ष के हैं। दिल्ली में भईया का दोबारा ऑपरेशन हुआ। इस बार डॉक्टरों ने बताया कि जब पहली बार ऑपरेशन हुआ था तो भईया की रीढ़ की हड्डी के पास नसें आपस में जुड़ गई थी। इस बार ऑपरेशन सफल हुआ है लेकिन कमर के नीचे का हिस्सा उम्र भर ऐसा ही रहेगा।

जब भईया घर आए तो कई देसी डॉक्टरों को भी दिखाते रहे। हालत वैसे के वैसे ही थे। भईया को

पेंशन लग गई और आठ लाख रुपए मिले I भईया को bed sores हो जाते थे जिनसे हर वक्त खून निकलता रहता था I भईया का खाना,पीना, टॉयलेट आदि बेड पर ही होता था I इतनी बुरी हालत में भी भईया हिम्मत करके खुद व्हील चेयर पर बैठते थे I हमारे पुराने घर का बरामदा बहुत ऊंचा था तो दो लोग चेयर पकड़ कर आंगन तक लाते थे I घर के पास वाले खेत में bamboo sticks को इस तरह से arrange किया था कि भईया उनके सहारे सुबह शाम एक एक घंटा चलने की प्रैक्टिस करते थे I भईया के favourite singer मुकेश थे, उस समय भईया   गाने सुनते थे

और हमारे गांव के लोग अपने-अपने cassette deck बंद कर देते थे ताकि disturbance न हो और गांव के लड़के भईया के आस पास ही रहते थे ताकि भईया को अच्छा लगे l हमारा काम होता था सभी के लिए चाय बनाना l दिन में आठ से दस बार चाय बनाना नॉर्मल बात थी और घर के काम भी उसी एक घंटे में निपटाने होते थे l जब-जब भईया अपने कमरे में वापिस जाते तो यही कहते की अब कोई आवाज़ नहीं करेगा l अब भईया की कंडीशन ऐसी थी कि अपने छोटे -छोटे काम खुद कर लेते थे l फिर भईया ने नया मकान बनाने की सोची l मकान तो बना लिया लेकिन अब भईया

का शरीर साथ नहीं दे रहा था l एक बार भईया ने बताया थी कि एक सेकंड के लिए भी दर्द नहीं हटता ,जख्मों से जलन नहीं हटती   और 100 तक बुखार रहता ही है l अब इस शरीर को और अधिक नहीं चला सकता l मेरे पास भईया को जबाब देने के लिए शब्द नहीं थे l मन में अजीब सी उलझन हो रही थी l अब भईया साल में दो महीने घर और 10 महीने हॉस्पिटल में रहते थे l चाचा जी के लड़के को महीने के हिसाब से पैसे देकर भईया के साथ भेजते थे क्योंकि हॉस्पिटल में रात को लेडीज नहीं रुक सकती थी l मम्मी को भईया अब मना करते थे क्योंकि घर में अब दादी

जी भी बीमार रहने लगे थे और मेरी दोनों बहनें भी थी I मेरे पति पांच छः महीने से पहले मायके भेजने का नाम नहीं लेते थे लेकिन मेरी बड़ी बहन आती रहती थी I 5 नवंबर 2006 को दादी जी की death हो गई I अब और अधिक मुश्किल आने लगी थी क्योंकि जो लड़का भईया के साथ हॉस्पिटल जाता था, वह अब जाने से मना करता था, उसे अपने कैरियर की चिंता थी I भईया नहीं चाहते थे कि उनकी बहने घर में अकेली रहे इसलिए अकेले ही हॉस्पिटल में रहने लगे और इस तरह समय बीतता गया Iएक बार मैं और जीजा जी हॉस्पिटल गए तो जो साथ वाले बेड पर जो

लड़का था उसके पिता जी उसके साथ रहते थे। उस भले इंसान ने हमें बहुत ही बुरी तरह से उलाहना दिया कि आज इतने महीनों बाद आपको सुनील की याद आई उस दिन मैं अपनेआप को कोसने के अलावा कुछ नहीं कर पाई। उसी दिन भईया ने बताया कि उनके जख्मों से इतनी बुरी दुर्गंध आ रही थी कि उन्हें एक अलग कमरे में रखा गया था और जो भईया को खाना दिया गया था अच्छा   तो था लेकिन थाली में इस तरह से परोसा हुआ था जैसे गांव में बचा हुआ खाना पशुओं को लेकर जाते हैं , लेकिन भईया के दिल में तो यही था कि मेरी बहन इतनी दूर से आई है तो मैं इसकी क्या सेवा

करूं अपनी हालत की कोई चिंता नहीं थी l कहने लगे कि यहां की खीर बहुत स्वादिष्ट होती है तुम खीर खा लो, मैंने बावर्ची से बोला था कि आज मेरी बहन आने वाली है l

हम चारों बहनों की ऐसी बहुत सी बातें हैं जिन्हें हम किसी के साथ शेयर नहीं करतीं l

जून 2010 को भईया की तबियत अचानक खराब हो गई l भईया की यादाश्त चली गई   और भईया किसी को भी पहचान नहीं रहे थे l भईया को जख्मों में इतनी जलन हो रही थी कि भईया कपड़े नहीं पहन रहे थे l मम्मी किसी को अंदर नहीं जाने दे रही थी क्योंकि   भईया की हालत को देखकर

लोग तरह-तरह की बातें कर रहे थे। जब मैं घर पहुंची, मैं सीधे भईया के कमरे में गई, उस दिन मैंने पहली बार भईया के जख्म देखे, मेरे मुंह से जोर से चीख निकल पड़ी। मेरी बहनें मुझे बाहर ले आई। उस दिन हम बहुत रोई थीं। भईया के जख्म इतने गहरे थे कि हड्डियों को साफ़ देखा जा सकता था और अब जख्मों से खून नहीं निकल रहा था। सभी कह रहे थे, ऐसी जिंदगी से तो मौत भली। हम चारों बहनों को लोगों की यह बातें बहुत बुरी लग रही थीं। हम तो यही दुआ कर रही थी कि भईया ठीक हो जाएं।हम सभी के लिए वो समय बहुत कष्ट भरा था लेकिन मम्मी ने

हिम्मत नहीं छोड़ी थी, पता नहीं इतनी हिम्मत कहां से आ गई थी।

अंत में में इतना ही कहना चाहूंगी कि जंग के मैदान में तो जंग कुछ दिन ही हुई थी लेकिन मेरे भईया जिंदगी और मौत से 10 सालों तक लड़ते रहे और 24 जून 2010 को इस नरक भरी जिंदगी को अलविदा कहते हुए अपनी मां को बेसहारा छोड़ कर इस दुनिया से दूर चले गए।

ऑनलाइन ज्ञानरथ गायत्री परिवार के सभी साथियों ने नोटिस किया होगा कि मैं अपने कॉमेंट में अक्सर सभी के स्वास्थ्य   की मनोकामना करती हूँ उसके पीछे यही वजह है।

जब तक भईया जीवित रहे मम्मी को कभी सिरदर्द भी नहीं हुआ, एक जांबाज सिपाही की तरह हालातों का सामना करती रही लेकिन भईया के जाने का दुःख सहन न कर सकी। आए दिन बीमारियों ने मम्मी को घेरे रखा। हर पल भईया को याद करती ओर रोती रहती। एक साथ कई बीमारियों का शिकार हो गई थी। भईया के जाने के बाद मेरे छोटे मामा ने दौड़ धूप करके मम्मी को भईया की पेंशन लगवा दी। अखबार की जो कटिंग मैने आपको भेजी थी पेंशन लगने से पहले की है

हमारी मम्मी भईया को याद करके कहती थी कि अगर उनके बेटे को गोलियां नहीं लगी होती तो मैं अपने बेटे की शादी एक सुंदर लड़की से करती। पराई बेटी को ब्याह कर अपने घर में   लाती उनके बच्चे होते मेरा घर भरा-भरा होता।

29 जुलाई 2021 को मम्मी को शुगर का अटैक आया, शुगर 1200 के करीब पहुंचने   के कारण सब कुछ खत्म हो गया, मम्मी भईया के पास चली गई और हम बदकिस्मत चारों बहिनें रह गईं।

आदरणीय अरुण भईया जी मेरे लिए यह सब लिखना बहुत ही कठिन था इसलिए बड़ी हिम्मत करके आज लिख रही हूँ।

बहुत सी बातें ऐसी हैं जिन्हें नहीं लिख पा रही हूँ।
परम पूज्य गुरुदेव से मेरी यही प्रार्थना है कि मेरा
बिछड़ा परिवार जहां भी है उन पर अपनी कृपा
बनाए रखना

जय गुरुदेव

ऑनलाइन ज्ञानरथ गायत्री परिवार के साथिओं की संवेदनाएं

Sarwind Kumar :

ॐ श्री गणेशाय नमः। ॐ श्री गुरुवे नमः॥ ॐ श्री सूर्याय नमः॥। परम पूज्य व परम स्नेहिल व परम आदरणीय अरुन भइया जी आपके श्री चरणों में नतमस्तक होकर भाव भरा सादर प्रणाम व हार्दिक नमन वन्दन करते हैं जिसे आप अपने अनुज का स्नेह व प्यार समझकर स्वीकार करें महान कृपा होगी हम सदैव आपके आभारी रहेंगे और आपका स्नेह व प्यार से ओतप्रोत शिक्षाप्रद भाव भरा लेख जो कि सप्ताह में एक दिन अपने सहकर्मियों की कलम से

लिखा गया स्पेशल सेगमेन्ट है जिसे पढ़ कर मन द्रवित हो गया और आँखों में आँसू आ गए जो कि बहुत ही दुखद घटना है। आज के स्पेशल सेगमेन्ट में हम सबकी समर्पित सहकर्मी आदरणीय निशा भारद्वाज बहन जी के एकलौते भाई सुनीलकुमार जी की अमर कहानी का उल्लेख किया गया है जो कि बहुत ही दर्द भरी कहानी है जिसे पढ़ कर आँखों से आंसू नहीं बंद हो रहे हैं। चार बहनों के बीच एक भाई थे जो कि आर्मी में थे और 1999 में कार्गिल युद्ध में भारत से करारी हार के बाद भी पाकिस्तान अपनी हरकत से बाज नहीं आया और अनवरत गोलाबारी करता रहता, इसी दौरान सुनील कुमार

जी राजौरी में ड्यूटी में तैनात थे और पाकिस्तान की गोलाबारी में गम्भीर रूप से घायल हो गए और तभी से अमर शहीद सुनील कुमार जी का इलाज चलता रहा लेकिन स्थाई लाभ नहीं मिला तथा गम्भीर कष्ट सहते हुए 2010 में अपना शरीर त्याग दिया। इसके पहले पिता जी का बीमारी के चलते निधन हुआ फिर दादी का निधन हुआ और अमर शहीद सुनील कुमार जी के निधन का सदमा माँ न सहन कर सकी और उनका भी निधन हो गया। इस तरह आदरणीय निशा भारद्वाज बहन जी का परिवार बिछुड़ गया। यह बहुत ही दुखद घटना है जो कि बहुत ही असहनीय व दर्द भरी घटना है।

आदरणीय निशा भारद्वाज बहन जी ने इस स्पेशल सेगमेन्ट को कैसे लिखा होगा, इसे अनुभव ही किया जा सकता है और इस अमर शहीद सुनील कुमार जी को आनलाइन ज्ञान रथ गायत्री परिवार श्रद्धा सुमन अर्पित कर अपनी श्रद्धांजलि देता है और परम पूज्य गुरुदेव से सामुहिक प्रार्थना करता है कि इस अमर शहीद की दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें और अपने श्री चरणों में स्थान दें।

आनलाइन ज्ञान रथ गायत्री परिवार परम आदरणीय निशा भारद्वाज बहन जी के श्री चरणों में नतमस्तक होकर भाव भरा सादर प्रणाम व हार्दिक नमन वन्दन करता है। आदरणीय निशा भारद्वाज

बहन जी आपकी महानता व समर्पण को हम सब
पाठकगण व सहकर्मी भाई बहन नतमस्तक हैं और
अति सुन्दर व ज्ञानवर्धक लेख प्रस्तुत करने के लिए
आदरणीय अरुन भइया जी आपको आनलाइन ज्ञान
रथ गायत्री परिवार की तरफ से बहुत बहुत
साधुवाद व हार्दिक शुभकामनाएँ व हार्दिक बधाई
हो और आप इसी तरह प्रेरणादायक व ज्ञानवर्धक
भाव भरी अभिव्यक्ति व विचारों को लिखकर हम
सबका उत्साहवर्धन व मार्गदर्शन कर मनोबल
बढ़ाने का परमार्थ परायण कार्य करके पुरुषार्थ
कमाने का सराहनीय व प्रशंसनीय कार्य अनवरत
करते रहें जिससे हम सबका मनोबल कभी कमजोर

न होने पाए और हम सबका दृष्टिकोण व दिशा बदले और आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त हो इसी आशा व विश्वास के साथ हम अपनी लेखनी को विराम देते हुए अपनी हर किसी गलती के लिए आपसे क्षमाप्रार्थी हैं और हम सब पाठकगण व सहकर्मी भाई बहन परम पूज्य गुरुदेव से आपके अच्छे स्वास्थ्य व उज्जवल भविष्य की शुभ मंगल कामना करते हैं और परम पूज्य गुरुदेव की कृपा दृष्टि आप और आपके परिवार पर सदैव बनी रहे यही हमारी गुरू सत्ता से प्रार्थना है और आपका हम हृदय से आभार व्यक्त करते हुए तहेदिल से आपका हार्दिक स्वागत व हार्दिक अभिनंदन करते हैं धन्यवाद जय

गुरुदेव जय माता दी सादर प्रणाम सुप्रभात ll

आपका अपना गुरु भाई व शुभचिन्तक अनुज

सरविन्द कुमार पाल संचालक गायत्री परिवार

शाखा करचुलीपुर कानपुर नगर उत्तर प्रदेश lll

....

Poonam Kumari :

ॐ श्री गुरु सत्तायै नमः🙇🙇

सभी आत्मीय परिजनों को भाव भरा सादर

नमन🙇🙇

आज का स्पेशल सेगमेंट अपने सहकर्मियों की कलम

से प्रस्तुत करने के लिए परम आदरणीय डॉक्टर

अरुण भैया जी को कोटि कोटि नमन और हार्दिक आभार🙏🙏

आज के स्पेशल सेगमेंट में आदरणीय निशा बहन जी के भैया की शहादत की पूरी घटना पढ़कर आँखों से अश्रुधारा बहने लगी कुछ भी पढ़ना और लिखना कठिन लग रहा है। मैं यही सोच रही हूं कि जब पढ़ कर मेरी यह हालत है तो निशा बहन जी का क्या हालत होगा जिन्होंने बचपन से अपने भाई के साथ समय गुजारा।इस दुख की घड़ी में परम पूज्य गुरुदेव आपको सहनशक्ति हिम्मत और धैर्य प्रदान करें। हम सभी OGGP के भाई बहन आपके साथ है।

10 वर्षों तक अस्पताल के बेड पर एक जाबाज सैनिक अपने जिंदगी और मौत से लड़ते रहे ।अमर शहीद सुनिल भैया को कोटि कोटि नमन और भावभीनी श्रद्धांजलि🙏🙏

आपकी मां को कोटि कोटि नमन🙏🙏

जय गुरुदेव जय विश्व वंदनीय माता की जय गायत्री माता

....

Sandhya Kumar:

परमपूज्य गुरुसत्ता को सादर नमन, वन्दन, पूजन आदरणीय डॉक्टर अरुण त्रिखा भाई जी को गुरुकुल पाठशाला में स्वाध्याय एवं सत्संग हेतु दिव्य ज्ञान

प्रसाद के रुप में साप्ताहिक स्पेशल सेग्मेंट "सहकर्मियों की कलम से" की प्रस्तुति हेतु हार्दिक आभार, साधुवाद, सादर नमन I आज आदरणीय निशा बहनजी की अनुभूति पढ़ कर मन भाव विह्वल हो गया है, आँखे नम हो रही हैं, लिखना-पढ़ना मुश्किल हो रहा है, किस तरह हिम्मत कर निशा बहनजी ने कलमबद्ध किया है यह हर परिजन अनुभव कर सकता है, शहीद सुनील जी को बारम्बार पुण्य स्मरण एवं सादर नमन, बचपन से देशभक्ति की भावना से परिपूर्ण इस भाई ने 19 वर्ष की आयु में सेना जॉइन कर ली किन्तु कारगिल युद्ध में हार के बावजूद धोखेबाज पाकिस्तान की

गोलाबारी जब तब चलती रही इसमें सुनील जी बेतरह ज़ख्मी हो गए और इस वीर सैनिक की जिंदगी मैदान की जगह हास्पिटल की बेड में सिमट गयी, दस साल तक जाबांज ने जीवन के लिए संघर्ष किया अंत में 24 जून 2010 को अलविदा कर गए, परम पूज्य माँ निर्मला देवी के साहस को नमन, वह हिम्मत से डटी रहीं, पेपर क्लिप भी इस बात का सबूत है,अपने बेटे के लिए हर माँ की तरह उनके भी सपने थे, जो मन में दबाये वह अपनी ड्यूटी में लगी रहीं, बेटे के दुनिया से जाने के बाद अनेक बीमारियों से घिर गयीं एवं 29 जुलाई 2021 को वह अपने बेटे के पास चली गई, माँ को सादर

नमन। अब विराम देती हूँ, मेरे लिखने में कुछ त्रुटि हो तो क्षमा करें, 🙏🙏🙏ॐॐॐ✿✿✿

****

Renu Srivastav:

ऊँ श्री गुरुसतायै नमः।गुरुचरणों में कोटि-कोटि नमन।भारत माता की जय।देश पर मर मिटने वालों को शहीद कहते हैँ पर जो देश के लिये गोली खाकर तिल- तिल अल्पायु नें अपने प्राण न्योछावर करे वाे भी शहीद ही हैं।निशा बहन ने जो अपने भाई और परिवार की दुख भरी दासता लिखी वह हर दिल को नतमस्तक होकर ऐसे वीर भाई के लिये ईश्वर से प्रार्थना करें कि जहाँ भी सूक्ष्म शरीर से हों

भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दें तथा अगला जन्म में सारी सुख सुविधा मिले।स्व भाविक है ऐसे जाबांज की कष्ट मय जीवन की जानकारी पढते हुये आँखों से अश्रुधार न बहें।नमन है उस मां को जिसने ऐसे सपूत को जन्म दिया तथा अपने बेटे के लिये दिन रात एक किया पर उसको जीवन न दे सकी ।अन्त में इसी गम को सहन करते वे भी संसार से विदा हो गई।

पढ़कर जब इतनी वेदना हो रही है तो उस परिवार ने कैसे सहन किया होगा,शायद हम कभी अनुमान न लगा सकें।

बहनों और परिवार के इस वेदना को शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। भगवान से यही प्रार्थना है कि भविष्य में किसी बहादुर सैनिक की ऐसी दुख दायी यात्रा न हो।

सुनील सिर्फ निशा बहन का ही भाई नहीं हम सब का बहादुर भाई है जो वर्षों तक कष्ट सहते हुये भारत माता की गोद में चिर निद्रा में चले गये। शत-शत नमन है। नमन है ऐसे भारत माता के वीर सपूत को।

....

Pushpa Singh

ॐ श्री गुरुवे नमः,जय हिन्द वन्दे मातरम 🙏 आज " अपने सहकर्मियों के कलम से " सेगमेंट में अपनी निशा बहन जी के जांबाज देशभक सुनील भाई की करूण व्यथा बहन के लेखनी से पढ़कर बहुत दुःख हुआ की 10 वर्षों तक कितना दर्द कितनी वेदना उन्होंने और परिवार के लोगों ने झेली पढ़कर रोंगटे खड़े हो गए l फिर भी भाई ने बड़ी हिम्मत दिखाई और अपने मरन्नासन स्थिति में भी बहनों के प्रति प्यार से खीर बनवाकर रखना , जब बहन मिलने आएगी तब खाएंगी ये उनके प्यार की पराकाष्ठा ही थी न !!! ऐसे जांबाज देशभक सुनील भाई को शत्

शत् नमन वंदन है। माता जी बेटे की सेवा में जब तक रहीं बेटे के ठीक होने की आस में खुद भी ठीक रहीं और उनके जाते ही वो भी अपने बेटे के शादी करने अपना घर भरा देखने के अधूरे सपने के साथ चल बसी ॐ शांति। इन सभी कष्टों को झेलते हुए सभी बहनें भी और पूरा परिवार भी बहुत दुःख उठाया और निशा बहन जी के अंतिम वाक्य से ऐसा लगता है की उनका अपना परिवार भी शायद साथ छोड़ दिया वैसे भगवान करे की ऐसा ना हो 🙏 जय गुरुदेव जी सबके मन को शांति दें आज का प्रज्ञागीत भी इस सेगमेंट के साथ फिर से सुनकर अच्छा लगा 🙏 निशा बहन जी का आभार है भाई

के अनुभूतियों को हम सबके सामने प्रस्तुत करने के लिए धन्यवाद 🙏

Arun Verma

परम पूज्य गुरुदेव परम वंदनीय माता दी एवं माँ गायत्री के श्री चरण कमलों में कोटि कोटि प्रणाम🙏

परम आदरणीय अरुण भैया जी को सत सत नमन वंदन 🙏एवं आपके चरणों में कोटि कोटि प्रणाम🙏

औनलाइन ज्ञान रथ गायत्री परिवार के अत्यंत समर्पित व निष्ठावान सहकर्मी परम आदरणीय निशा भारद्वाज बहन जी को सत सत नमन करते हैं

बह्न जी आपका इस दर्द विदारक दास्ताँ को पढ़कर
हृदय कांप उठा, और नयनों में आंसू छलक आये,
ऐसा दर्द ईश्वर किसी को न दे, जिंदा लाश बनकर
11 सालों तक इस दर्द को झेलने वाला वीर सैनिक
को मेरा सलाम 🙏 बह्न जी आप वाकई एक पूर्ण
समर्पित कार्यकर्ता हैं, आपके हिम्मत को नतमस्तक
हैं, इस तरह का हृदय विदारक वृतान्त को लिखकर
औनलाइन ज्ञान रथ गायत्री परिवार के प्लेटफार्म
पर शेयर करना एक वीर बहादुर का ही काम है,
ऐसे भी आप एक " वीर योद्धा " अमर शहीद
सुनिल कुमार का बहन हैं, ऐसे भारत के सपुतों को
श्रद्धा सुमन श्रधांजलि अर्पित करता हूँ और परम

पूज्य गुरुदेव परम वंदनीय माता जी से नम्रता पूर्वक प्रार्थना करता हूँ कि इस दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में जगह दें, जितना देर तक इस दास्ताँ को पढ़ते रहे उतना समय तक आंखों में आंसू आते रहे,

बहन जी आपके भाई का जगह तो नहीं ले सकता हूँ लेकिन अपना भाई से कम मत समझना, औनलाइन ज्ञानरथ गायत्री परिवार के सभी भाई आपके भाई हैं

आपको हमेशा औनलाइन ज्ञान रथ गायत्री परिवार के तरफ से प्यार मिलते रहेगा, परम पूज्य गुरुदेव परम वंदनीय माता दी एवं माँ गायत्री की कृपा दृष्टि आप और आपके परिवार पर अनवरत बना रहे

यही मंगल कामना है, औनलाइन ज्ञान रथ गायत्री परिवार के सभी परिवार जनों को कोटि कोटि प्रणाम🙏

पूज्य गुरुदेव की कृपा आप सभी पर बनी रहे जय गुरुदेव जय माँ गायत्री🙏